जागृति में कलीसिया

"उन को प्रभु प्रतिदिन उन में मिला देता था।"
प्रेरितों के काम 2:47

आशीष रायचूर

केवल निःशुल्क वितरण के लिए

ऑल पीपल्स चर्च एंड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करणः 2023

संपर्क जानकारी

All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: **bookrequest@apcwo.org**
Website: **apcwo.org**

अन्यथा जब तक इंगित न किया हो धर्म शास्त्र के सभी संदर्भ पवित्र बाइबल के पुनःसंपादित पुराने संस्करण से अनुमति सहित लिए गए हैं। सर्वाधिकार आरक्षित है।

आर्थिक साझेदारी

इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता की वजह से सम्भव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता के लिए आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाएं या अपना योगदान कैसे करें यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे “ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता” पृष्ठ देखें। धन्यवाद!

निःशुल्क संसाधन

उपदेशः apcwo.org/sermons | **पुस्तकेंः** apcwo.org/books | **चर्च ऐपः** apcwo.org/app
बाइबिल कॉलेजः apcbiblecollege.org | **ई-लर्निंगः** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्शः chrysalislife.org | **संगीतः** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिपः pamfi.org | **ए.पी.सी. वर्ल्ड मिशंसः** apcworldmissions.org

(Hindi - A Church in Revival)

"उन को प्रभु प्रतिदिन उन में मिला देता था।"
प्रेरितों के काम 2:47

जागृति

जागृति में कलीसिया

विषयसूची

परिचय

1. यरुशलेम में कलीसिया 1

2. जागृति में कलीसिया 8

परिचय

जागृति परमेश्वर से भेंट का समय है। यह समय पृथ्वी पर स्वर्गीय प्रवाह के उँड़ेले जांए जाने का समय है। भेंट के दौरान चीजें बहुत अलग दिखाई पड़ती हैं! 2008 की शुरुआत में जो वचन हमें परमेश्वर से प्राप्त हुआ था, उसी वर्ष यह पुस्तक लिखी गई, वह वर्ष आत्मिक और भौतिक वर्षा के उँड़ेले जाने का वर्ष होगा, यह हमें बिल्कुल ज्ञात नहीं था, हमें केवल इस बात का ज्ञान था कि परमेश्वर ने कहा है यह वर्ष उँड़ेले जाने का वर्ष होगा। उस वर्ष के अंत में ही हम चीजों को होते हुए देखने लगे। और अब हम केवल परमेश्वर द्वारा की हुई प्रतिज्ञा के अनुसार आगे बढ़ रहे हैं और अपने आप को उस जागृति के उँड़ेले जाने, और भेंट के समय का स्वागत करने हेतु तैयार कर रहे हैं।

हम परमेश्वर से जागृति—एक भेंट या उस प्रवाह को भेजने की याचना करते हुए प्रार्थना करते हैं—परंतु क्या हम जागृति के लिए तैयार हैं? हमें उस जागृति के लिए तैयार रहना हैं वह जब भी प्रकट होगी।

जब जागृति होगी तब कलीसिया कैसी दिखाई देगी? आपको और मुझे कैसा लगेगा जब जागृति हमारे बीच में होगी, जब एक स्वर्गीय प्रवाह होगा, एवं परमेश्वर से आत्मिक भेंट होगी? एक बात नि‍चित है कि कलीसिया जैसी अभी दिखती है वैसी नहीं दिखाई देगी। जब हम रविवार के दिन कलीसिया के रूप में एकत्रित होते हैं, हम आमतौर पर पासबान के प्रचार के समाप्त होने का इंतजार करते हैं। हम में से कुछ लोग शायद प्रचार के बीच में सो भी जाते होंगे और फिर अपने घर चले जाते होंगे! परंतु जब परमेश्वर की ओर से भेंट होगी तब कलीसिया बहुत अलग दिखाई देगी! परमेश्वर की वर्षा के उँड़ेले जाने के लिए तैयार रहें!

परमेश्वर आपको आशीष दे!
आशीष रायचूर

1
यरुशलेम में कलीसिया

इस पुस्तक का दर्शन या उद्देश्य यह चित्रित करना है कि जब परमेश्वर का प्रवाह हमारे मध्य में होगा और उनसे भेंट का समय होगा तब कलीसिया का जीवन कैसा दिखेगा। आइये प्रेरितों के काम की पुस्तक के पहले आठ अध्यायों का अध्ययन करें और यरुशलेम में आई जागृति से कुछ मुख्य बिन्दुओं को देखें—एक ऐसी भेंट जिसने यरुशलेम में कलीसिया को जन्म दिया! हम "जागृति" और कलीसिया के जीवन विषय में, स्वर्गीय भेंट के मध्य जन्मी यरुशलेम में कलीसिया उसके जीवन के द्वारा सीख सकते है।

एकता और प्रार्थना में जन्मी

जागृति से पहले क्या घटित होगा? वास्तव में कौन सी तैयारी होगी जिसे यरुशलेम के लोगों ने स्वर्गीय प्रवाह के उँड़ेले जांने के समय के पहले की थी? यीशु ने अपने शिष्यों से येरूशलम मे रुकने का आदेश दिया क्योंकि वहाँ स्वर्गीय प्रवाह उँड़ेला जांने वाला था। उसने उन्हे एक विशेष स्थान का निर्देश देकर वहाँ रुकने के लिए कहा। जागृति के प्रवाह या उँड़ेले जांए के पहले की तैयारी के विषय में प्रेरितों के काम 1:14 में इंगित किया गया है।

प्रेरितों के काम 1:14
ये सब कई स्त्रियों और यीशु की माता मरियम और उसके भाइयों के साथ एक चित होकर प्रार्थना में लगे रहे।

यरुशलेम में सभी 120 लोग एक मन होकर निरंतर प्रार्थना और निवेदन करते रहे। यहाँ ध्यान देने योग्य दो बातें हैं।

एकचित होना

पहला *"एकचित,"* जिसका अर्थ है "एकमत होना" या एक समान विचार होना। बाइबल कहती है कि वे एकमत होकर चलते रहे। उन्होने न केवल

एकाग्रता के साथ आरंभ किया बल्कि वे निरंतर एकचित बने रहे। इस प्रकार, एकता—एक साथ रहना, एकमत या एक ही विचार होना और एक ही उद्देश्य का होना अत्यधिक आवश्यक है। एक ही उद्देश्य का होना और एक ही दिशा में आगे बढ़ना हमारे लिए परमेश्वर के प्रवाह का उँड़ेले जाने की एक महत्वपूर्ण माँग है। एक ऐसा वातावरण जहां एकता होगी, वहाँ प्रवाह उँड़ेला जाएगा। परमेश्वर वहाँ अपनी आशीष का आदेश देगा।

भजन सहिता 133:1-3
1 देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें!
2 यह तो उस उत्तम तेल के समान है, जो हारून के सिर पर डाला गया था, और उसकी दाढ़ी पर बह कर, उसके वस्त्र की छोर तक पहुंच गया।
3 वह हेर्मोन की उस ओस के समान है, जो सिय्योन के पहाड़ों पर गिरती है! यहोवा ने तो वहीं सदा के जीवन की आशीष ठहराई है।

इसका अर्थ यह है कि उँड़ेले जाने की तैयारी की प्रक्रिया में, आपको और मुझे आत्मा की एकता को बनाए रखने के प्रयास द्वारा, यह एक ही लक्ष्य का ध्यान रखना होगा कि—हम परमेश्वर के लिए भूखे हैं और हमें उसकी और अधिक आवश्यकता है। जब परमेश्वर के लोग एकता के साथ, चाहे उनके नाम संस्थान और समुदाय, सिद्धांत भिन्न हों और वे इन मतभेदों को दूर कर के एक साथ होकर, केवल परमेश्वर को खोजने के एक ही उद्देश्य से आगे बढ़ते हैं, तब उसकी आत्मा की उपस्थिति और सामर्थ का महान प्रवाह होगा । तब सभी पर अभिषेक, ताजगी और जीवन की वर्षा उँड़ेली जाएगी, सिर से पैर तक, और बड़े से लेकर छोटे तक!

प्रार्थना और निवेदन

दूसरा बिन्दु यह है कि यरुशलेम में एकत्रित होने वाली कलीसिया में प्रार्थना और निवेदन देखे जा सकते थे। वे निरंतर प्रार्थना, निवेदन और मध्यस्था में बने रहे। वे बिलकुल एकाग्रचित होकर प्रार्थना और निवेदन में एक बने रहे- जो कि परमेश्वर के द्वारा भेजे गए प्रवाह से पहले तैयारी थी।

हमारा कलीसिया में अगले 50 वर्षों तक जाते रहने का कोई मतलब नहीं, प्रत्येक रविवार दो घंटे अच्छे-अच्छे संदेशों को सुनना, अच्छा महसूस

करना, अपने ज्ञान में वृद्धि करना, परंतु परमेश्वर को अनुभव न करना जिसे हम जान रहे हैं। परमेश्वर के ज्ञान में वृद्धि करना और उसे अनुभव करना भिन्न चीजें हैं। मसीही धर्म केवल ज्ञान पर आधारित नहीं है; परंतु यह परमेश्वर को अनुभव करना है। हमें केवल कलीसिया में जाकर थकने के अनुभव से बाहर निकलकर परमेश्वर को और अधिक गहराई से जानने की अभिलाषा करनी होगी।

इस प्रकार, कलीसिया के रूप में हमारी यह प्रतिक्रिया व्यक्त करना चाहिए, "परमेश्वर, हमारा उद्देश्य साझा है। हमें आपकी और अधिक आवश्यकता है, और हम सब पूरी तरह से इसमें एक साथ हैं!" परंतु, हमें स्वंय को स्वार्थी उद्देश्य, संदेश और प्रतियोगिता से सुरक्षित रखना होगा। क्योंकि, यदि हमारा स्वार्थी उद्देश्य होगा वह संदेह और, संदेह प्रतियोगिता और बड़े बँटवारे को जन्म देगा । इनमे भावनाओं का कोई स्थान या भावनाओं के प्रवेश निषेध होना चाहिए, क्योंकि हम एक हैं; हम एकचित् हैं और हमारा एक ही उद्देश्य–**हमें और अधिक परमेश्वर चाहिए!**

"यह" "वही" है

प्रेरितों के काम 2:1-4

1 जब पिन्तेकुस का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे।
2 और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उस से सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया।
3 और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं; और उन में से हर एक पर आ ठहरीं।
4 और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे।।

"जब पिन्तेकुस का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, ..." (प्रेरितों के काम 2:1, 2अ)। ध्यान दें कि निरंतर वह सब एक साथ, एक स्थान पर थे और अचानक, स्वर्ग खुल गया और एवं परमेश्वर ने उनके ऊपर आग बरसाई अतः यह वही था–(उंडेल जाना) प्रवाह का आरंभ हो चुका था अभी शुरुआत हुई थी! यीशु ने यही प्रतिज्ञा की थी और वही हुआ।

हजारों यहूदी पिन्तुकुस्त के दिन का उत्सव मनाने के लिए यरुशलेम में एकत्रित हुए थे। इतिहासकारों का मानना है कि यहूदी लोगों की गिनती सैकड़ों और हजारों तक होगी। और फिर, कुछ विशेष हुआ जब 120 शिष्य ऊपरी कक्ष में एकत्रित थे। वे भिन्न भाषाओं में बोलने लगे और यह समाचार फैल गया। तुरंत ही, एक बड़ी भीड़ एकत्रित हुई और उन्होंने इन सब लोगों को भिन्न-भिन्न भाषाओं परमेश्वर की प्रशंसा करते हुए सुना और देखा। उस समय पतरस को भीड़ को कुछ बताने की आवश्यकता प्रतीत हुई, अतः वह खड़ा होकर कहने लगा, *"परंतु यह वही बात है जो भविष्यवक्ता योएल द्वारा कही गई थी:"* (प्रेरितों के काम 2:16)। "यह वही है," कहकर पतरस, पवित्र आत्मा की प्रेरणा से यह बता रहा था कि जो उस दिन यरुशलेम में हुआ था वह योएल द्वारा पुराने नियम में की गई भविष्यवाणी थी।

योएल 2:28-29
[28] उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूँगा;
तुम्हारे बेटे-बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी,
और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे।
[29] तुम्हारे दास और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपना आत्मा उण्डेलूँगा।

अब पतरस वास्तव में क्या कहना चाहता था? उसका मतलब था, "यह वही है!" परंतु यदि हम इस वचन को पढ़ें तो हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि "यह" "वो" **नहीं** था। क्यों? क्योंकि योएल ने कहा, *"तुम्हारे पुत्र और पुत्रियाँ भविष्यवाणी करेंगे, और तुम्हारे जवान पुरुष दर्शन देखेंगे।"* परंतु 120 लोग क्या कर रहे थे? वहाँ उनके बीच में कोई दर्शन, कोई स्वप्न, कोई भविष्यवाणियाँ नहीं थी। बल्कि, आकाश से बड़ी आँधी की सनसनाहट, आग की लपेटों की जीभें और भिन्न-भिन्न भाषा में बोलना दिखाई पड़ा। तो "यह" वास्तविकता मे "वह" नहीं था! अतः मैं सही व्याख्यात्मक अनुवाद सिखाता हूँ—मैं अपने छात्रों को यूनानी, उस समय का इतिहास, संस्कृति इत्यादि को सावधानीपूर्वक अध्ययन करने को कहता हूँ। इसलिए, यदि मैं मेरे स्वाभाविक मन में जो हो रहा है उसका वि लेषण करूँ, मेरा निष्कर्ष होगा, "यह वह नहीं है!" योएल ने *"आँधी की सनसनाहट की गूँज"* के विषय में बात नहीं की। न ही योएल ने *"आग की सी जीभों"* या विभिन्न

भाषाओं में बोलने के विषय में भविष्यवाणी नहीं की। परंतु पवित्र आत्मा पतरस के द्वारा कह रहा था "यह वही है।" इस पर मेरे बौद्धिक विश्लेषण का यही निष्कर्ष निकलता है!

यहाँ पर हमें दो महत्वपूर्ण अनुमान लगाने की आवश्यकता है।

परमेश्वर अपने वचन से बड़ा है

पहले, परमेश्वर अपने वचन- बाइबल से बड़ा है। हम प्रायः परमेश्वर को उसके वचन में जोड़ने की कोशिश करते हैं। परमेश्वर अपनी लिखी हुई पुस्तक से बड़ा है। जो पुस्तक उसने लिखी वह उस- असीमित परमेश्वर के एक छोटे से भाग का वर्णन करती है। जितना मैं इस बात पर विश्वास करता हूँ कि बाइबल सर्वोपरी, ईश्वरीय प्रेरणा से रची गई, और इस पृथ्वी पर हमारे जीवन के लिए सम्पूर्ण अधिकार है, मैं इस बात को जानता हूँ कि बाइबल सम्पूर्ण रीति से उस असीमित परमेश्वर का वर्णन नहीं करती। परमेश्वर कभी अपने वचन का विरोध नहीं करेगा; वह हमेशा अपने द्वारा प्रकट की गई बातों के प्रति सत्य ठहरेगा। परंतु वह अपने लिखित वचन से असीमित रूप से बड़ा है!

कई बार, जब हम वचनों का विश्लेषण करते हैं, "यह" का अर्थ "वह" नहीं होता, परंतु परमेश्वर कहता है, "यह" "वही" है। क्योंकि, जब योएल आत्मा के कार्य के विषय में बात कर रहा था, वह आत्मा के कार्यों की विस्तार से सूची नहीं दे रहा था, वह केवल—दर्शनों, भविष्यवाणियों, और स्वप्नों की सूची मात्र दे रहा था। और जो पिन्तुकुस्त के दिन घटित हुआ वह भी आत्मा का कार्य था, कुछ और भी कार्य—आंधी की सनसनाहट की ध्वनि, आग की जीभें, और विभिन्न भाषाओं में बोलना। वे अब भी फिर भी आत्मा के कार्य हैं। अतः "यह" "वही" है। अमेन।

अतः जागृति में हमें बुद्धि और प्रकाशन के साथ चलने की आवश्यकता है। हमें दोनों की आवश्यकता है। कई बार हम प्रकाशन नहीं केवल बुद्धि के साथ चलते हैं। हम सब बाइबल वचनों के सारे इतिहास को जानते हैं—इब्रानी, यूनानी, और सबका का ज्ञान रखते हैं। हम प्रायः जानते हैं कि

"सही बात," क्या है परंतु परमेश्वर की "वर्तमान की बात," का प्रकाशन या प्रकटीकरण हमारे पास नहीं होता। अतः हमारे पास जो सही बात है, वह मश्क़ है, "वर्तमान की बात" नया दाखमधु है। यदि हमारी मश्क़ में नया दाखमधु नहीं भरा जाएगा तो हम नए दाखमधु को प्राप्त नहीं कर पाएंगे। हमें बुद्धि और प्रकटीकरण का आत्मा चाहिए यह परखने के लिए कि परमेश्वर "वर्तमान में" क्या कर रहा है ताकि हम उसका स्वागत कर सकें और, उसमें चल सकें। "अभी" या वर्तमान का वचन लिखित वचन का कभी विरोध नहीं करेगा, अतः यह समझने के लिए कि "वर्तमान" में परमेश्वर क्या कर रहा है, हमारे पास "वर्तमान" का वचन होना आवश्यक है।

जागृति या उँड़ेला जाना असमान हो सकते हैं

दूसरा महत्वपूर्ण मुद्दा जो हमें पतरस के वाक्यांश से समझना है "यह वही है" यह नहीं कि, दोनों जागृति और प्रवाह या उँड़ेला जाना समान नहीं है! दोनों में समानताएं भी हो सकती हैं परंतु यह आवश्यक नहीं कि हों। योएल ने परमेश्वर के आत्मा के उँड़ेले जाने का विवरण दिया था। पिन्तुकुस्त के दिन जो भी हुआ था वह परमेश्वर की आत्मा द्वारा उँड़ेले जाना वास्तविक था सत्य था। परमेश्वर कह सकता है, "यह उँड़ेला जाना है; यह भेंट हैं," परंतु हम कह सकते हैं "यह" तो "उसके" जैसा बिलकुल नहीं दिखाई पड़ता! हम जागृतियों के इतिहास का अध्ययन कर सकते हैं, वचनों को सीख सकते हैं, और जागृति के नमूनों को छान सकते हैं परंतु हम परमेश्वर को एक डिब्बे में बंद करके यह नहीं कह सकते कि जागृति उसी प्रकार दिखनी चाहिए जिस प्रकार उस जगह में दिखी थी! उसी प्रकार परमेश्वर के उँड़ेले जाने के अनुभव में अग्रसर होने पर हममे परमेश्वर के प्रति खुलापन होना चाहिए। हमें यह समझना है कि अभी परमेश्वर हमारे मध्य में क्या करना चाहता है। हमें अपने आप से यह प्रश्न करना है कि "परमेश्वर कलीसिया के रूप में किस ओर हमारी अगुवाई कर रहा है? हमारे शहर के विषय में परमेश्वर की क्या ईच्छा है?" हमारे शहर में होने वाली जागृति संसार के किसी दूसरे भाग में होने वाली जागृति के समान नहीं दिखाई देगी। परंतु फिर भी वह बिलकुल नया होगा, यह एक जागृति, परमेश्वर और स्वर्ग द्वारा उँड़ेली गई है।

प्रेरितों के काम 2 के उल्लेख से हम देखते हैं कि कलीसिया का जन्म इसी वर्षा के उँड़ेले जाने से हुआ था। वास्तव में, यही पहली स्थानीय कलीसिया थी।

प्रेरितों के कम 2:41
अतः जिन्हों ने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा ल और उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उनमें मिल गए।

एक रात्रि में, तीन हजार लोगों की जीवित कलीसिया बन गई। प्रायः मैं इस बात की कल्पना करता हूँ कि वह समय कैसा होगा—प्रेरितों के स्थान पर स्वंय को रखने का अनुभव कैसा होगा! वे किसी सेमीनरी या बाइबल कॉलेज से स्नातकता प्राप्त किए हुये नहीं थे, और न ही उनके पास "कलीसिया के प्रबंधन," "कलीसिया की बढ़ोतरी," के सिद्धांतों का ज्ञान था, परंतु फिर भी, उनकी मंडली में 3000 लोग थे! न कोई योजना, न कोई रणनीति, न कोई पूर्व निर्देशन, न अनुसरण करने के लिए कोई आदर्श, न जी—12 सेल समूह—कुछ भी नहीं—किन्तु लगभग एक ही क्षण में कलीसिया का जन्म हुआ!

मैं योजना या नीति सीखने की महत्वपूर्णता को कम नहीं कर रहा हूँ। मैं हम सब के हृदय में इस समझ को डालने की कोशिश कर रहा हूँ कि—"यदि परमेश्वर अप्रत्याशित रूप से कुछ करता है, तो आईए हम भी उसी के साथ चलें!" परमेश्वर हमेशा हमारी योजना या अच्छी नीति के अनुसार कार्य नहीं करता! शिक्षित होने ने के नाते, हमें हमारे दिमाग का प्रयोग करने की आदत होती है, और वहीं पर यह समझने में हमारा संघर्ष शुरू होता है कि आखिर परमेश्वर कर क्या रहा है। यदि परमेश्वर अप्रत्याशित रूप से कुछ कर रहा है तो, हम उसी के साथ चलें!

2
जागृति में कलीसिया

यरुशलेम की कलीसिया जागृति में पैदा हुई। अतः यह समझ हमारे लिए एक आदर्श के रूप में काम करती है कि, कलीसिया जागृति में कैसी दिखेगी। हम कुछ पाठों को सीख सकते हैं उँड़ेले जाने और जागृति का अनुभव करने के लिए क्या अपेक्षा की जाये। प्रेरितों के काम के प्रथम आठ अध्याय यरुशलेम की कलीसिया के पहले 12 वर्षों का विवरण देते हैं।

प्रतिदिन निरंतर उसी मे बने रहे जो परमेश्वर उनके मध्य प्रकट करता रहा

प्रेरितों के काम 2:42-47

42 और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।
43 और सब लोगों पर भय छा गया, और बहुत से अद्भुत काम और चिन्ह प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे।
44 और वे सब विश्वास करने वाले इकट्ठे रहते थे, और उन की सब वस्तुएं साझे की थीं।
45 और वे अपनी अपनी सम्पत्ति और सामान बेच बेचकर जैसी जिस की आवश्यकता होती थी बांट दिया करते थे।
46 और वे प्रति दिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे।
47 और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उन से प्रसन्न थेः और जो उद्धार पाते थे उन को प्रभु प्रति दिन उन में मिला देता था।

हमने देखा कि विश्वासी प्रतिदिन निरंतर उन बातों में बने रहे जो परमेश्वर उनके मध्य प्रकट कर रहा था।

प्रेरितों के काम 2:42

और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।

प्रेरितों के काम 2:46
और वे प्रति दिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे,

प्रेरितों के काम 5:42
और प्रति दिन मन्दिर में और घर घर में उपदेश करने, और इस बात का सुसमाचार सुनाने से, कि यीशु ही मसीह है न रूके।।

ये लोग जो यरुशलेम में थोड़े समय की यात्रा की योजना बनाकर आए थे, वे अपने आप को अचानक प्रतिदिन होने वाली बातों मे देखने लगे। यह कुछ इस प्रकार से है जैसे हमारा रविवार की सभाओं में जाना, कभी-कभी कलीसिया में होने वाली विशेष सभाओं में जाना, एकांत जीवन व्यतीत करना जहाँ सब कुछ हमारे द्वारा नियोजित है। परंतु जागृति में, प्रतिदिन कुछ घट ता रहता है! यरुशलेम की कलीसिया निरंतर उन चीजों में बनी हुई थी जो परमेश्वर उनके मध्य में कर रहा था। वे प्रतिदिन उसके साथ प्रवाहित होते रहते थे—न कि “सात दिन में एक बार” का कार्यक्रम!

कार्यक्रम समस्त रूप से प्रभावित

यह सोचना बड़ा आसान होगा कि उनकी दिनचर्या समस्त रूप से प्रभावित होती होगी। जागृति में, हमारी दिनचर्या प्रभावित होगी! जागृति में, हमारे भी कार्यक्रम प्रभावित होंगे! शायद थोड़ी “गड़बड़” भी हो सकती है। यरुशलेम में लोग शायद पहले से अपनी यात्रा की योजना बनाते होंगे—वे शायद एक सुबह अगले ही दिन वापसी की योजना बना कर पिन्तुकुस्त के पर्व को मनाने के लिए यरुशलेम में गये हों और वापसी के अगले दिन, शायद अपने काम—धंधों पर जाने की सोचते होंगे!

सोचिए, वे यरुशलेम में आये और वहाँ परमेश्वर महान रूप से आत्मा को उंडेल रहा था या प्रवाहित कर रहा था ने! उनके जीवन स्पर्श हुये और 3000 लोगों ने उद्धार प्राप्त किया! उनके कार्यक्रम डावांडोल हो गए, कोई चीज़ उन्हें सुबह और संध्या के समय मंदिर की ओर, परमेश्वर की खोज और स्तुति करने के लिये खींच रही थी। जब जागृति फैलती है, तब दैनिक कार्यक्रमों पर भी प्रभाव पड़ता है। मैं यहाँ पर हमें काम पर न जाने की सलाह

नहीं दे रहा हूँ। परंतु मैं यह कहने की कोशिश कर रहा हूँ चीजें कुछ प्रकार से होंगी कि हमारे दैनिक जीवन के कार्यक्रमों में सुधार और परिवर्तन में आ जाएगा। हमें जागृति में यह जानकार आना आवश्यक है कि हम एक ऐसी ऋतु में हैं जब परमेश्वर हमारे मध्य में भ्रमण कर रहा है । हमें हमारे दैनिक कार्यक्रमों में उस पुनःपरिवर्तन के लिए तैयार रहना है जिसे परमेश्वर प्रकट करता है। हम में से कुछ लोग प्रार्थना करते होंगे, "परमेश्वर हमें जागृति चाहिए। अपनी आत्मा को उँड़ेलिए परमेश्वर! हमसे भेंट कीजिए, परमेश्वर!" परंतु जब परमेश्वर "आता है" एवं हमारे दैनिक कार्यक्रमों मे परिवर्तन करता है तो क्या हम यह कहेंगे कि, "हम जागृति चाहते है, किन्तु हमारे दैनिक कार्यक्रमों को छूए बिना, एवं हमारे जीवन मे हस्तक्षेप किए बिना।" क्या सच में हम परमेश्वर द्वारा जागृति को भेजने वाली प्रार्थना का उत्तर प्राप्त करने के लिए तैयार हैं?

सामुदायिक भावना–साथ बांटना

प्रेरितों के काम 2:44,45

44 और वे सब विश्वास करने वाले इकट्ठे रहते थे, और उन की सब वस्तुएं साझे की थीं।
45 और वे अपनी अपनी सम्पत्ति और सामान बेच बेचकर जैसी जिस की आवश्यकता होती थी बांट दिया करते थे।

यरुशलेम की कलीसिया जिस प्रकार इस उँड़ेले जाने वाले प्रवाह में बढ़ रही थी, हम देखते हैं कि वहाँ सामुदायिक साझेपन की गहरी भावना थी। अचानक वे दोपहर और रात का भोजन साथ करने लगे थे, और शायद उन लोगों के साथ मिलकर यात्रा कर रहे थे जिन्हे वे पहले जानते भी नहीं थे। इन लोगों के मध्य में समुदाय की पूर्णतः नई भावना का अनुभव था। बाइबल बताती है उनकी सब वस्तुएं साझे की थी और उन्होंने उसे आपस में बाँटना आरंभ कर दिया था। अतः जागृति क्या करती है? यह हमारी जीवन में एक सामुदायिक भावना का निर्माण करती है। हम अपनी यात्राएं साझा करना आरंभ कर देते है, हमारे देने, सहायता करने मे सहजता स्वच्छंदता आ जाती है।

कलीसिया का तेजी से विकास

और हम यरुशलेम की कलीसिया में भी एक भारी बढ़ती को देखते हैं। *"... और जो लोग उद्धार पाते थे प्रभु उनको उनमें प्रतिदिन मिला देता था"* (प्रेरितों के काम 2:47ब)। हमें प्रतिदिन जुडने वालों का पूरा तो नही पता, परंतु शायद उनकी संख्या 100, या 200 या केवल 10 रही होगी, परंतु बाइबल इस बात का उल्लेख करती है कि लोग प्रतिदिन जुड़ते जा रहे थे। पतरस के पहले संदेश के बाद, एक दिन में 3000 लोग जुड़े थे (प्रेरितों के काम 2:41)। बाद में, लंगड़े आदमी की चंगाई के बाद 5000 और जुड़ गए (प्रेरितों के काम 4:4)। सचमुच कितनी अद्भुत बढ़ोतरी! क्या हम भी हमारे शहर की कलीसियाओं में ऐसी अद्भुत बातों को देखना नहीं चाहेंगे?

उल्लेखनीय चमत्कार जिनके कारण कलीसिया का निरंतर विकास

हम देखते हैं कि चमत्कारों के कारण कलीसिया निरंतर बढ़ती गई। बहुत से चमत्कार हुये, परंतु केवल कुछ विशेष चमत्कारों को ही हमारे लिए प्रेरितों के काम में अभिलिखित किया गया। एक मनुष्य था जो 40 वर्षों से लंगड़ा था, उसकी चंगाई हुई (प्रेरितों के काम 3:1-8)। बीमार लोग दूर-दूर से आए और पतरस की परछाई उन पर पड़ी, और वे चंगे हो गए!

प्रेरितों के काम 5:12-16

12 और प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और अद्भुत काम लोगों के बीच में दिखाए जाते थे, (और वे सब एक चित्त होकर सुलैमान के ओसारे में इकट्ठे हुआ करते थे।
13 परन्तु औरों में से किसी को यह हियाव न होता था, उन में जा मिलें; तौभी लोग उन की बड़ाई करते थे।
14 और विश्वास करने वाले बहुतेरे पुरूष और स्त्रियां प्रभु की कलीसिया में और भी अधिक आकर मिलते रहे।)
15 यहां तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला लाकर, खाटों और खटोलों पर लिटा देते थे, कि जब पतरस आए, तो उस की छाया ही उन में से किसी पर पड़ जाए।
16 और यरूशलेम के आस पास के नगरों से भी बहुत लोग बीमारों और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुओं का ला लाकर, इकट्ठे होते थे, और सब अच्छे कर दिए जाते थे।

अतः जागृति में, हमारे मध्य भी इसी प्रकार होगा। उल्लेखनीय चमत्कार होंगे। हम हमारे दैनिक जीवन में होने वाले चमत्कारों के लिए परमेश्वर

को धन्यवाद देते हैं, परंतु जागृति के दौरान भी हमारे मध्य में उल्लेखनीय चमत्कार होने लगेंगे।

सताव

जागृति में कलीसिया सताव को आकर्षित करेगी। जब हम उँड़ेले जाने के मध्य होंगे, कुछ कारणों से, यह सताव को आकर्षित करेगा। तो क्या तब भी हम उँड़ेले जाने की चाह रखेंगे? पतरस और यूहन्ना को सभा में ले जाया गया और यीशु के नाम में प्रचार न करने की आज्ञा दी (प्रेरितों के काम 4:17, 18)। प्रेरितों को बंदीगृह में डाला गया (प्रेरितों के काम 5:17,18)। स्तिुफनुस को पथराव द्वारा मार दिया गया (प्रेरितों के काम 7:58)। उँड़ेले जाने के बीच सताव का बढ़ना कोई नई बात नहीं है। परंतु इस बात को देखें कि प्रेरितों ने किस प्रकार प्रतिक्रिया व्यक्त की!

प्रेरितों के काम 4:19,20
19 परन्तु पतरस और यूहन्ना ने उन को उत्तर दिया, कि तुम ही न्याय करो, कि क्या यह परमेश्वर के निकट भला है, कि हम परमेश्वर की बात से बढ़कर तुम्हारी बात मानें।
20 क्योंकि यह तो हम से हो नहीं सकता, कि जो हम ने देखा और सुना है, वह न कहें।

प्रेरितों के काम 5:41
वे इस बात से आनन्दित होकर महासभा के साम्हने से चले गए, कि हम उसके नाम के लिये निरादर होने के योग्य तो ठहरे।

प्रेरितों ने ऐसा नहीं कहा कि वे परमेश्वर को स्वर्ग को बंद करने या वर्षा को ”धीमा” करने के लिए कहेंगे। परंतु, जो परमेश्वर जो कर रहा था वे उसके साथ चलने के लिए प्रसन्न थे। वे परमेश्वर की आज्ञा मानने से खुश थे और उन्होने यीशु मसीह के नामे में सताये जाने को अपने लिए आदर की बात माना। हमें भी प्रभु यीशु मसीह के नाम में सताये जाने को आदर की बात समझना है!

हम में से अधिकांश लोगों ने आरामदायक जीवन जिया है। हमने मुश्किल से कभी सताव देखा होगा। हमने शायद “थोड़ा बहुत” हमारे कार्य-क्षेत्र में अनुभव किया होगा कि हमारे साथ काम करने वाला हम से बात नहीं करता या हमारे साथ खाना नहीं खाता या जैसे पहले हमारे लिए

कॉफी लाता था अब वैसा नहीं करता जब उसे हमारे विश्वास के बारे में पता चला। और हमे लगता है कि हम हमारे कार्य-क्षेत्र में हमारे विश्वास के कारण सताव सह रहे हैं। परंतु ईमानदारी से, हम ने अभी तक ऐसा कुछ नहीं देखा जिसे सच में "सताव" कहा जा सके। परंतु यदि हम कहें, "परमेश्वर, हमें जागृति चाहिए," तब हमें और सताव के लिए तैयार रहना है जिस प्रकार यरुशलेम की कलीसिया ने अनुभव किया।

पाप के लिए कठोर निर्णय

हम सभी जानते हैं कि जागृति के माहौल में, परमेश्वर के लोगों के मध्य में अनुग्रह, चमत्कारों और वरदानों की बहुतायत पाई जाती है। परंतु उसी समय, पाप के विरुद्ध दंड भी बहुत कड़ा होता है। हम में से कितने लोग झूठ बोलने पर मरते हैं? यदि ऐसा होता तो, यहाँ पर कोई भी जीवित नहीं रहता। आज भी, चाहे हम सब विश्वासी हैं, हम में से कुछ अभी भी झूठ बोलते हैं, चोरी करते हैं, और फिर भी कोई भी मरता नहीं! परंतु यरुशलेम में जागृति के मध्य हनन्याह और सफ़ीरा ने झूठ बोला और कलीसिया में जो वे दान देते थे उसमें से कटौती की, और वे उसी क्षण मर गए (प्रेरितों के काम 5:1-10) यह बहुत गंभीर दंड है!

अलौकिक प्रदर्शन और स्वर्गदूतों का भ्रमण

प्रारम्भिक कलीसिया ने चंगाइयों और चमत्कारों के अतिरिक्त अलौकिक प्रदर्शनों और स्वर्गदूतों के आगमन का भी अनुभव किया। प्रेरितों के काम 4:31 उल्लेख देता है, *"... जिस स्थान पर प्रार्थना के लिए एकत्रित थे हिलने लगा।"* यह न केवल पृथ्वी पर भूकंप के झटके जैसा था बल्कि जिस स्थान पर वह प्रार्थना के लिए एकत्रित हुए थे वह स्थान हिल गया। सोच कर देखें, आप प्रार्थना सभा में हैं और अचानक बिना गिरे, इमारत हिलती हुई महसूस होती है। प्रेरितों के काम 5:19-21 कहता है कि स्वर्गदूत आए और प्रेरितों को बंदीगृह से बाहर निकाल कर ले गए। प्रेरितों के काम 8:26 इस बात का उल्लेख करता है कि एक स्वर्गदूत ने फिलिप्पुस को जंगल में जाने को कहा। अतः पवित्र आत्मा के उँड़ेले जाने के दौरान स्वर्गदूतों की क्रियाओं एवं सेवकाई का उदय होग।

आंतरिक समस्याओं से रहित नहीं

उँड़ेले जाने या भेंट के मध्य, कलीसिया आंतरिक समस्याओं से रहित नहीं होगी। कई बार, हमारी गलत धारणा होती है कि यह परमेश्वर का महान भ्रमण है, अतः किसी प्रकार की समस्या नही होगी। इस धारणा के विपरीत, यरुशलेम की कलीसिया ने समस्याओं का अनुभव किया। पहला मुद्दा जिसे उन्हे निपटना था वह था विधवाओं के बीच मतभेद। कुछ यूनानी भाषी और कुछ इब्रानी भाषी विधवाएँ थी। कुछ को लगा कि भोजन वितरण के समय उनके साथ सही व्यवहार नहीं हो रहा है (प्रेरितों 6)। परंतु प्रेरित परमेश्वर की बुद्धि से आगे बढ़े और इस समस्या का समाधान किया।

महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारी जागृति के समय भी आंतरिक समस्याएँ आ सकती हैं, और हमें उन्हे परमेश्वर की बुद्धि द्वारा हल करना है और डरना नही है। दूसरी ध्यान योग्य बात है कि अगुवों ने यह निर्णय लिया कि उन्हे अपने आप को जो अधिक महत्वपूर्ण था—वचन और प्रार्थना की सेवकाई के लिए स्वंय को समर्पित करना था। अगुवों ने उस पर ज़ोर दिया जो अधिक महत्वपूर्ण था—जागृति के लिए अगुवाई प्रदान करना। यह हमारे लिए एक महत्वपूर्ण पाठ है जैसे हम परमेश्वर का अनुसरण करते हैं।

हमें सावधानी रखना है कि हम अगुवों को ऊँचा स्थान न दें। जागृति एक व्यक्ति या सेवकाई पर केन्द्रित नहीं होना चाहिए। परंतु, हमें जागृति में अगुवेपन की महत्वपूर्णता को समझना चाहिए- अगुवों को उनका स्थान लेना है, जिम्मेदार बनना है और जो परमेश्वर उन से चाहता है उस पर ध्यान रखें। यह मदद करेगा कि वर्षा बढ़ती रहे, और कम न हो। वेल्श जागृति के विषय में एक दुखद बात थी। ईवान रॉबट्र्स जागृति का मुख्य अगुवा था और जागृति के बढ़ने पर बहुत प्रख्यात हो गया, परंतु कुछ दुखद घटा। वह तुरंत उस अगुवेपन की पदवी से नीचे आ गया। ईवान रॉबट्र्स ने मानसिक और शारीरिक क्षीणता का सामना किया- एक ही रात में बहुत ज्यादा थकान, और उसने उस अगुवेपन की पदवी को त्याग दिया और अपना बचा हुआ जीवन अकेलेपन में बिताया- ज़्यादातर लिखने और प्रार्थना में। एक व्यक्ति का बहुत दुखद अंत जिसे परमेश्वर ने वेल्श जागृति के दौरान सामर्थी रूप से इस्तेमाल किया!

जागृति के समय अगुवापन (नेतृत्व) बहुत महत्वपूर्ण है। हालाकि हम अगुवेपन को उठाना या उनको बढ़ाना नहीं चाहते, हमें यह समझना आवश्यक है कि, जो जागृति में अगुवे है उन्हे अपना ध्यान केंद्रित रखना आवश्यक हैं, और अपने आप को थकने से बचना है, और साथ ही साथ, उत्तरदायी बने परमेश्वर इस पृथ्वी पर हमारे मध्य में जो कर रहा है उसके लिए हम उत्तरदायी है।

प्रत्येक व्यक्ति चमत्कारों के बहाव में

प्रेरितों के काम में, अंत मे हम देखते हैं जिस प्रकार उंडेल जाना निरंतर बढ़ता गया, प्रत्येक व्यक्ति चमत्कारों के प्रवाह में बहने लगा। जल्द ही, हम (प्रेरितों के काम 6) में स्तिफनुस और (प्रेरितों के काम 8) में फिलिप्पुस के विषय में सुनते हैं जिनके द्वारा बड़े-बड़े चमत्कार हुए। मेरा इस बार पर दृढ़ विश्वास है कि जो परमेश्वर चाहता है वह यह कि कलीसिया में प्रत्येक व्यक्ति यीशु मसीह के नाम द्वारा बीमारों को चंगा करे, दुष्ट आत्माएं निकाले, और मुर्दों को जिलाए। वह अपने लोगों को शहर की सड़कों पर उसकी महिमा को प्रदर्शित करते हुए देखना चाहता है। प्रत्येक विश्वासी चिह्न और चमत्कारों का गलियों में प्रदर्शन करेगा जहाँ लोगों को उसकी जरूरत हो। और परमेश्वर कलीसिया को उसी में लाना चाहता है और परमेश्वर के प्रवाह के मध्य ऐसा ही होगा। आप और मैं सड़कों, बाज़ारों, और जहाँ कहीं लोग हैं वहाँ परमेश्वर की महिमा को प्रदर्शित करेंगे!

आग फैलने लगती है

जागृति की आग फैलती है! यरुशलेम में शाऊल के द्वारा सताव में अगुवाई के कारण, विश्वासी बिखर गए थे परंतु वे जागृति की आग को जहाँ कही गए लेकर गए। वे सामारिया और यहूदिया में गए और वहाँ पर भी आग लग गई (प्रेरितों के काम 8)। कुछ अंताकिया में गए और अंताकिया में भी आग भड़क गई (प्रेरितों के काम 11)। साधारण विश्वासी जागृति की आग को जहाँ-कहीं गए लेकर गए। मैं इस बार पर विश्वास रखता हूँ कि हम में से प्रत्येक “जागृति को फैलाने वाला” बन जाएगा–परमेश्वर द्वारा उँड़ेले जाने के समय जागृति की आग को फैलाने वाले।

यह शायद सताव हो सकता है या नहीं जो हमें जागृति के बीच में से बाहर लेकर जाए। यह शायद एक नई नौकरी, तबादला या कुछ और भी हो सकता है। कई कारण हो सकते हैं जिनके कारण हमें बंगलौर शहर से बाहर जाना पड़ सकता है। परंतु जब हम जाएं, हम परमेश्वर की वर्षा को साथ लेकर जाएंगे! हम परमेश्वर की आग को लेकर जाएंगे और और बाहर जाकर संसार के अन्य क्षेत्रों में भी अग्नि भडकाएंगे! और यह जागृति में कलीसिया का होना है!

जागृति में कलीसिया का होना, एवं जागृति के मध्य परमेश्वर जो भी करता है उसके द्वारा हमारे दैनिक जीवन प्रभावित होंगे एवं हमारे कलीसिया जीवन भी प्रभावित होंगे जैसा की हम जानते हैं। परंतु यह हर चीज के लिए योग्य है, यदि हमारे शहरों मे परिवर्तन हो रहा है तो इसके लिए परमेश्वर से भेंट की आवश्यकता होगी, यदि हमारे शहर प्रभावित होतें है तो, इसका अर्थ है कि है हमें आज से भी और अधिक परमेश्वर की आवश्यकता होगी। जबकि हम उन बातों के लिए कृतज्ञ हैं जो परमेश्वर ने पहले से ही हमारे शहर में की है, हम हमारे शहर के उन लोगों की संख्या के विषय में भी विचार करें जो अभी तक प्रभु यीशु को नहीं जानते। अभी भी लाखों लोग यीशु को नहीं जानते। यदि हम हमारे शहर को प्रभावित करना चाहते हैं, हमें परमेश्वर के महान उँड़ेले जाने की एवं भेंट की आवश्यकता है। हमें परमेश्वर भेंट की और अधिक आवश्यकता है उसकी तुलना जिसमें हम आज चल रहे हैं, और इसका अर्थ है कि आपको और मुझे उसी में आगे बढ़ना है। क्या हम परमेश्वर से एक महान जागृति, उसकी महान आत्मा को उँड़लने जाने की मांग करने के इच्छुक हैं?

आइये जागृति में कलीसिया बनकर आगे बढ़ें!

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

दो हज़ार साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रकट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सबने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकृत हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है"*** **(रोमियों 6:23)।** यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मर गया। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग पर चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति

का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह मुफ्त क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण ह्रदय से विश्वास करना।

"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी" **(प्रेरितों के काम 10:43)।**

"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा" **(रोमियों 10:9)।**

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धि पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लहू बहाया और मेरे पापों का दण्ड चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मरकर और फिर मरे हुओं में से जी उठकर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने ह्रदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकता किया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं पापों की क्षमा और मेरे पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वाासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए। आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च (एपीसी) का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

आल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली, वचन पर केन्द्रित, आत्मा से भरपूर** परिवारिक कलीसिया, एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधार, संसार में सुसमाचार करने वाली कलीसिया है

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में, हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में, हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में, हम ईश्वरीय अगुवों और आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझौता के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारी वेबसाईट का अनुसरण करें: **apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें: **contact@apcwo.org**

निःशुल्क प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word—The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses–Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Speaking in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। पी. डी. एफ., आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में निःशुल्क ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, निःशुल्क ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस काउंसलिंग

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस काउंसलिंग व्यावसायिक तौर प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु समूहों के लिए हैं और जीवन की चुनौतियों की एक विस्तृत श्रृंखला का समाधान करती हैं।

किशोरों	**व्यवहार सम्बंधी विकार**
व्यक्तिगत समायोजन	**व्यक्तित्व विकार**
संबंधपरक चुनौतियां	**मनोवैज्ञानिक / भावनात्मक समस्याएं**
शिक्षा में कम सफलता पाने वाले	**तनाव / आघात**
कार्य संबंधित मुद्दे	**शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल**
परिवार / दम्पत्तिः विवाह पूर्व, वैवाहिक	**आत्मिक समस्याएं**
माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी	**ज़िंदगी की सीख**

क्रिसलिस काउंसलिंग सेवाओं के लिए शुल्क सस्ती और सुलभ है।

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिए:

Website: chrysalislife.org
Phone: +91-80-25452617 or toll-free (within India) 1-800-300-00998
Email: counselor@chrysalislife.org

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एंड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (आ) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (इ) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, 'मसीही अगुवों के लिए सभाओं' का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में निःशुल्क वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस का कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "ऑल पीपल्स चर्च," बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग कर आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

Account Name: All Peoples Church

Account Number: 50200068829058

IFSC Code: HDFC0004367

Bank: HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru, 560043, Karnataka

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें:* **apcwo.org/give**

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for

"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

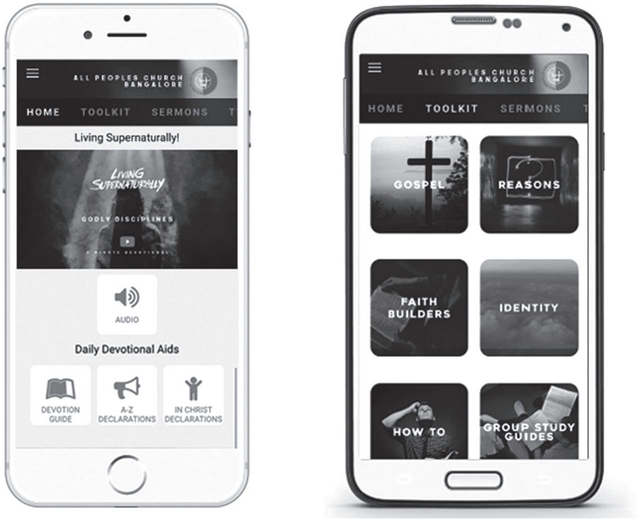

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज और सेवा प्रशिक्षण केंद्र (एपीसी-बीसी) भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज (एपीसी-बीसी) में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं:

- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (सी.टी.एच.)
- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय डिप्लोमा (डी.टी.एच.)
- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय स्नातक (बी.टी.एच.)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक (UTC+5:30)** कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैंपस:** कैंपस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लें
- **ऑनलाइन:** ऑनलाइन लाइव व्याख्यान में भाग लें
- **ई-लर्निंग:** ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से स्वयं कि गति से सीखने के लिए **apcbiblecollege.org/elearn**

ऑनलाइन आवेदन करने के लिए, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के बारे में अधिक जानकारी केलिए, कृपया इस वेबसाइट को भेंट दें: **apcbiblecollege.org**

जागृति परमेश्वर से भेंट का समय है। यह समय पृथ्वी पर स्वर्गीय प्रवाह के उँड़ेले जांए जाने का समय है! हम परमेश्वर से जागृति-एक भेंट या उस प्रवाह को भेजने की याचना करते हुए प्रार्थना करते हैं-परंतु क्या हम जागृति के लिए तैयार हैं? हमें उस जागृति के लिए तैयार रहना हैं वह जब भी प्रकट होगी!

जब जागृति होगी तब कलीसिया कैसी दिखाई देगी? आपको और मुझे कैसा लगेगा जब जागृति हमारे बीच में होगी, जब एक स्वर्गीय प्रवाह होगा, एवं परमेश्वर से आत्मिक भेंट होगी? एक बात निश्चित है कि कलीसिया जैसी अभी दिखती है वैसी नहीं दिखाई देगी। जब हम रविवार के दिन कलीसिया के रूप में एकत्रित होते हैं, हम आमतौर पर पासबान के प्रचार के समाप्त होने का इंतजार करते हैं। हम में से कुछ लोग शायद प्रचार के बीच में सो भी जाते होंगे और फिर अपने घर चले जाते होंगे! परंतु जब परमेश्वर की ओर से भेंट होगी तब कलीसिया बहुत अलग दिखाई देगी!

परमेश्वर की वर्षा के उँड़ेले जाने के लिए तैयार रहें।

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org